2 OCT 12 2026.qxd 01-10-2026 21:19 Page 1

श्राद्ध कर्मके लिए कुतुप, रोहिणी मुहूर्त

पितृपक्ष



पितृपक्ष हिंदू धर्म में पितरों के प्रति श्रद्धा, कृतज्ञता और स्मरण का विशेष समय माना जाता है। आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि से लेकर आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि तक की अवधि को महालया, पितृपक्ष, श्राद्ध आदि कहते हैं। इस अवधि में पितरों की आत्मा की शांति के लिए तर्पण, पिंडदान और ब्राह्मण भोज जैसी परंपराओं का पालन किया जाता है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इन कर्मों के माध्यम से व्यक्ति अपने पूर्वजों के प्रति सम्मान प्रकट करता है और उनके लिए शांति एवं सद्गति की कामना करता है। पितृपक्ष के दौरान आपके अपने या दूसरे घरों में देखा होगा कि श्राद्ध का ब्राह्मण भोज दोपहर के समय किया जाता है।

श्राद्ध कर्म के लिए कुतुप मुहूर्त, रोहिणी मुहूर्त

पितृपक्ष में श्राद्ध का समय अपराह्न काल यानी दोपहर का समय महत्वपूर्ण माना गया है। श्राद्ध कर्म के लिए कुतुप मुहूर्त, रोहिणी मुहूर्त और उसके बाद दोपहर का समय महत्वपूर्ण माना गया है. आमतौर पर यह समय लगभग 11 बजकर 30 मिनट से 3 बजकर 15 मिनट के बीच में होता है. शहरों के बीच यह समय थोड़ा ऊपर नीचे हो सकता है।

दोपहर में ही क्यों होता है ब्राह्मण भोज?

पितृपक्ष में श्राद्ध कर्म के लिए दोपहर का समय विशेष माना गया है. धर्मशास्त्रीय परंपराओं में दिन के इस हिस्से को पितृ कर्म के लिए उपयुक्त बताया गया है। मान्यता है कि दोपहर के समय सूर्य आकाश में ऊंचाई पर होता है और इसी अवधि में पितरों के निमित्त किए जाने वाले श्राद्ध, तर्पण तथा पिंडदान का विशेष महत्व माना जाता है। शास्त्रों में अलग-अलग समय को अलग-अलग कार्यों के लिए तय किया गया है। सुबह और शाम का समय देव कार्यों के लिए बताया गया है, तो दोपहर का समय पितरों के लिए माना गया है। वहीं रात के समय को नकारात्मक शक्तियों से जोड़ा गया है. इसलिए कहा जाता है कि दोपहर के समय देवी-देवताओं की पूजा अर्चना नहीं करना चाहिए क्योंकि दिन का मध्यकाल पितरों का समय माना गया है. दरअसल पितर मृत्यु लोक और देव लोक के मध्य लोक में निवास करते हैं, जो चंद्रमा के ऊपर बताया गया है. दिन का मध्य समय पितरों को समर्पित होने की वजह से इस समय श्राद्ध कर्म में ब्राह्मण भोज कराया जाता है. दूसरी वजह यह भी है कि सूर्योदय पूर्व दिशा की ओर होता है, जो देवताओं की दिशा मानी जाती है. दोपहर के समय सूर्य आकाश मध्य भाग में होते हैं, जिससे पितरों को सूर्य के माध्यम से उनका अंश प्राप्त होता है। इसी वजह से दोपहर का समय श्राद्ध के लिए उपयुक्त माना गया है.

कुतुप काल से क्या है संबंध?

श्राद्ध के समय से जुड़ा एक महत्वपूर्ण शब्द कुतुप काल है, पापों का शमन करने के कारण इस बेला को 'कुतुप' नाम दिया गया है. पारंपरिक हिंदू मान्यताओं में इसे दिन के उस विशेष समय से जोड़ा जाता है, जो श्राद्ध कर्म के लिए शुभ माना जाता है और यह हिंदू पंचांग का आठवां मुहूर्त माना जाता है. सामान्यतः कुतुप काल दोपहर के आसपास आने वाला समय माना जाता है, जो आमतौर पर दोपहर 11 बजकर 30 मिनट से 12 बजकर 30 मिनट तक होता है, इसकी अवधि 48 मिनट की होती है. इस समय सूर्य की किरणें और ऊर्जा का प्रभाव ऐसा होता है कि अर्पित किया गया भोजन और जल सीधे पितरों तक पहुंचता है. इसी अवधि को पितरों के निमित्त तर्पण, पिंडदान और अन्य श्राद्ध कर्म करने के लिए सबसे उत्तम माना गया है.

ब्राह्मण भोज का महत्व

पितृपक्ष में ब्राह्मण को श्रद्धापूर्वक भोजन कराने की भी पुरानी परंपरा है. धार्मिक दृष्टि से इसे पितरों को भोजन अर्पित करने के प्रतीकात्मक माध्यम के रूप में देखा जाता है. श्राद्ध में सात्विक भोजन तैयार करके पहले पितरों को स्मरण किया जाता है और फिर ब्राह्मण को भोजन कराया जाता है. भोजन के बाद यथाशक्ति दक्षिणा और अन्य सामग्री अर्पित करने की परंपरा भी कई परिवारों में है।

मोक्षके पवित्र द्वार

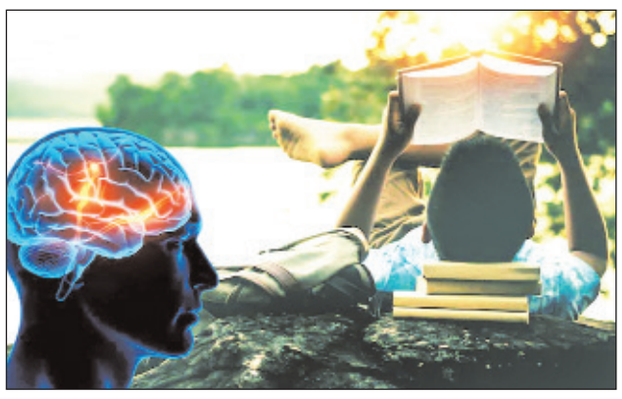


भारत की मोक्ष यात्राओं का कोई भी आख्यान मध्य प्रदेश और गुजरात की जीवनरेखा नर्मदा के उल्लेख के बिना पूर्ण नहीं हो सकता। स्कंद पुराण के 'रेवा खंड' सहित कई प्राचीन भारतीय ग्रंथों में नर्मदा को 'रेवा' या 'रेवा' के नाम से संबोधित किया गया है। वायु पुराण में नर्मदा की उत्पत्ति के रहस्य को स्पष्ट करते हुए इसे 'पितरों की पुत्री' बताया गया है, जो इस नदी की आध्यात्मिक महिमा को पिंडदान के संदर्भ में सर्वाधिक प्रासंगिक बना देता है। शास्त्रीय मान्यताओं में यह स्पष्ट उल्लेख है कि रेवा (नर्मदा) के तट पर किसी भी स्थान पर किया गया श्राद्ध, पितृ तर्पण और पिंडदान पूर्वज तृप्त होते हैं और आत्मा को जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति मिलती है। मनुष्य को 'अक्षय' (कभी नष्ट न होने वाला) पुण्य प्रदान करता है। अन्य नदियों के विपरीत, नर्मदा में केवल स्नान करने से ही नहीं, बल्कि इसके दर्शन मात्र से भी पापों का नाश माना गया है. नर्मदा के तल से प्राप्त होने वाले स्वयंभू 'नर्मदेश्वर' या 'बाण लिंग' की पूजा बिना किसी प्राण-प्रतिष्ठा के की जा सकती है, जो इस नदी की अद्वितीय प्राणिक ऊर्जा का प्रमाण है. पितृ पक्ष के दौरान अमरकंटक से लेकर भरूच तक फैले रेवा के विस्तृत तटों पर पिंडदान करने से





पढ़नेसे सचमें खुल जाता है दिमाग



वो कहावत को आपने भी सुनी होगी, 'पढ़ोगे-लिखोगे तो बनोगे नवाब' मम्मी-पापा या बड़े लोग अक्सर बच्चों को पढ़ाई की अहमियत समझाते नजर आते हैं। क्योंकि पढ़ने से हमारा दिमाग खुल जाता है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि ऐसा सच में भी होता है। अलग-अलग भाषाएं हमारे दिमाग के अलग-अलग हिस्सों को सक्रिय करती हैं। इसके पीछे गहरा विज्ञान है। वैज्ञानिकों ने लंबे रिसर्च के बाद जाना कि जैसे आंखों से देखना या आवाज निकालने के सर्किट हमारे दिमाग में नॉर्मल हैं, हम इसके साथ ही पैदा होते हैं, लेकिन पढ़ना, मानव मस्तिष्क के लिए कोई सामान्य क्षमता नहीं है, जो हमें जन्मजात मिलती है, तो आखिर पढ़ने से हमारे दिमाग में ऐसा क्या होता है कि पढ़ने से दिमाग तेज होता है? ये पूरा विज्ञान काफी मजेदार है। वैज्ञानिक बताते हैं, जैसे-जैसे विकास हुआ, मानव मस्तिष्क और शरीर कई चीजों के लिए तैयार हुआ। दिमाग ने कई चीजों के लिए सर्किट तैयार किए हैं। पर हमारे दिमाग के पास पढ़ने के लिए अलग सर्किट बनाने का समय नहीं रहा। इसलिए पढ़ने का नेटवर्क बनाने के लिए हम दिमाग के उन हिस्सों को इस्तेमाल करते हैं जो देखने, सुनने, भाषा, ध्यान और भावनाओं से जुड़े होते हैं। यानी पढ़ते समय ये सारे सर्किट काम में आते हैं. अलग-अलग भाषाएं हमारे दिमाग के अलग-अलग हिस्सों को सक्रिय करती हैं। वैज्ञानिक अब जानते हैं कि पढ़ने से दिमाग सक्रिय होता है, जिससे अक्षर और शब्द ध्वनियों और अर्थों से जुड़ जाते हैं। पढ़ना असल में पूरे दिमाग की प्रक्रिया है। इसमें कॉर्टेक्स के सभी चार लोब सक्रिय होते हैं। पढ़ने वाला दिमाग विकसित होने से, दिमाग की गतिविधि, संरचना और कनेक्टिविटी सब बदल जाता है. ये भी अहम है कि जो भाषा हम पढ़ते हैं, वह भी दिमाग को आकार देती है. जैसे चीनी अक्षर लॉगोग्राफिक सिस्टम हैं। हर वस्तु या विचार को अक्षरों के समूह की बजाय एक प्रतीक से दिखाया जाता है। शोध बताते हैं कि लॉगोग्राफिक लेखन प्रणाली सीखने से दिमाग के अलग हिस्से सक्रिय होते हैं, जबकि वर्णमाला-आधारित भाषा जैसी हिंदी या अंग्रेजी सीखने से अलग हिस्से. इसमें दृश्य स्मृति और दृश्य जुड़ाव वाले हिस्से ज्यादा काम करते हैं। यानी आप कौनसी भाषा सीख रहे हैं, वो भी आपके दिमाग के अलग-अलग हिस्से खोलती है। चाहे कोई भी भाषा हो, पढ़ना सिर्फ दिमाग को प्रभावित नहीं करता, बल्कि शारीरिक स्तर पर भी असर डालता है। पढ़ते वक्त हम किसी किरदार की घबराहट या दर्द को अपने अंदर महसूस कर सकते हैं और से सिर्फ भावुक होने से नहीं जुड़ा है। असल में, एंटीरियर इंसुला नाम का हिस्सा, जो पेट की हलचल, मतली, दर्द और असुविधा की भावनाओं के लिए जिम्मेदार है, कई सहानुभूति प्रक्रियाओं से भी जुड़ा होता है. गट-माइंड कनेक्शन के चलते ये भी प्रभावित होता है।

वैदिक झोपड़ी

महानगरों की लाइफस्टाइल थका देती है. 5-6 दिन मशीन की तरह काम करने के बाद वीकेंड पर आराम के लिए शांत-एकांत प्रकृति के करीब जाने का मौका मिल जाए तो शरीर तरोताजा हो जाता है। खेत-खलिहान के बीच सात्विक भोजन मिल जाए तो ऐसी ताजगी मिलती है जो महीनों याद रहती है। अगर कोई ऐसी जगह मिल जाए जहां पूरा शरीर डिटॉक्स हो जाए, तनाव दूर भाग जाए तो फिर क्या कहना. राजस्थान के झुंझुनूं जिले में अनोखी वैदिक झोपड़ी बनी हुई है। यह झोपड़ी प्रकृति के करीब है। यहां पर प्राकृतिक विधियों से बीमारियों को भी दूर किया जाता है. देश-विदेश से लोग यहां पर भारतीय अनुभव पाने के लिए आते हैं.राजस्थान के झुंझुनूं जिले में ऐतिहासिक गांव मंडावा है। मंडावा में ही पीके-बजरंगी भाईजान जैसी फिल्मों की शूटिंग हुई है। मंडावा में बड़ी-बड़ी हवेलियां हैं जिन्हें फिल्मों में दिखाया जाता है। मंडावा के पास गोविंदपुरा गांव है। यह गांव भी आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। दरअसल, इस गांव में वैदिक झोपड़ियां बनी हुई है। यह इलाका शेखावटी कहलाता है। वैदिक झोपड़ी में नेचुरोपैथी से इलाज भी किया जाता है। यहां शुद्ध और सात्विक राजस्थानी भोजन परोसा जाता है। राजस्थानी संस्कृति, लोक संगीत और हस्तकला से परिचय कराया जाता है. प्रकृति के बीच ये वैदिक झोपड़ियां बनाई गई हैं। कॉटेज किराए पर भी मिलती हैं। ग्रामीण परिवेश के हिसाब से ये कॉटेज तैयार की गई हैं।



आपने बहुत से बंदरों के बारे में सुना होगा। बंदरों को अक्सर पेड़ों पर उछलते-कूदते या लोगों के आसपास घूमते देखा जाता है लेकिन आज हम आपको एक ऐसे बंदर के बारे में बताने जा रहे हैं, जिसकी जिंदगी किसी आम बंदर से बिल्कुल अलग थी। यह बंदर सिर्फ एक परिवार का प्यारा सदस्य ही नहीं था, बल्कि उसके नाम करोड़ों की संपत्ति भी थी। जी हां, उत्तर प्रदेश के रायबरेली में एक कपल ने इस बंदर को अपने बेटे की तरह पाला और बाद में अपनी पूरी संपत्ति उसके नाम करने की वसीयत तक तैयार कर दी। इतना ही नहीं इसके मरने के बाद मंदिर में इसकी मूर्ति भी लगवाई गई। हम जिस बंदर के बारे में बताने जा रहे है उसका नाम था 'चुनमुन'. दरअसल, यूपी के रायबरेली के रहने वाले राजेश श्रीवास्तव हिंदू थे, जबकि शबिस्ता मुस्लिम थीं। दोनों ने धर्म की दीवारें तोड़कर शादी की, लेकिन इसके बाद समाज और उनके अपने परिवारों ने उन्हें अपनाने से इनकार कर दिया। सामाजिक बहिष्कार के चलते यह कपल कई सालों तक अकेलेपन का सामना करता रहा। इसी तन्हाई को दूर करने के लिए साल 2005 में उनकी जिंदगी में 'चुनमुन' की एंट्री हुई। 500 रुपये में घर आया था चुनमुन बताया जाता है कि चुनमुन को 500 रुपये में खरीदा था। उसकी मां की बिजली का झटका लगने से मौत हो चुकी थी। मां के बिना वह छोटा बंदर अकेला था। कपल ने उसे अपने पास रख लिया और धीरे-धीरे उससे उनका लगाव बढ़ता चला गया। राजेश और शबिस्ता ने चुनमुन को कभी सिर्फ पालतू जानवर की तरह नहीं देखा। दोनों उसे अपने बेटे की तरह पालने ल। उसकी हर जरूरत का ख्याल रखा जाता था और घर में उसके लिए अलग इंतजाम किए गए थे।

८५० रुपये किलो नींबू, ६८० का टमाटर, खीरा भी 300 का



नॉर्वे के एक सुपरमार्केट में सब्जियों के दाम सुनकर लोग हैरान हैं। एक भारतीय शख्स नींबू, टमाटर और खीरे की कीमत बताता है. इन दामों की भारत से तुलना भी की गई है. लेकिन सब्जियों की कीमत से शुरू हुई यह चर्चा अब किसानों की कमाई और उन्हें मिलने वाले दाम तक पहुंच गई है। आखिर नॉर्वे में रोजमर्रा की सब्जियां इतनी महंगी क्यों हैं और भारत से कितना है अंतर नॉर्वे की खूबसूरत जगहें और वहां की लाइफस्टाइल लोगों को काफी पसंद आती है। विदेश में रहने वाले कई भारतीय वहां की जिंदगी से जुड़े वीडियो भी सोशल मीडिया पर शेयर करते हैं लेकिन इस बार नॉर्वे का एक वीडियो अपनी खूबसूरती नहीं, बल्कि सब्जियों की कीमतों की वजह से वायरल हो रहा है। सुपरमार्केट में मिलने वाली रोजाना इस्तेमाल की सब्जियों के दाम उन्हें भारतीय रुपये में बताता है। इन कीमतों को देखकर भारत और नॉर्वे में सब्जियों के दाम का बड़ा फर्क साफ नजर आता है. नॉर्वे में ऑर्गेनिक नींबू करीब 850 रुपये किलो है। लाल टमाटर की कीमत करीब 680 रुपये किलो है। वहीं, एक खीरा करीब 300 रुपये का मिल रहा है. अब भारत की कीमतों पर नजर डालें. यहां बड़े शहरों में नींबू करीब 90 से 110 रुपये किलो मिल जाता है. टमाटर की कीमत करीब 60 से 80 रुपये किलो रहती है।

'तू है मेरी किरण' में पति संग रोमांस करती नजर आयेंगी सोनाक्षी सिन्हा

अभिनेत्री सोनाक्षी सिन्हा और उनके पति अभिनेता जहीर इकबाल जल्द 'तू है मेरी किरण' फिल्म में साथ नजर आएंगे। फिल्म का ऐलान मेकर्स ने कर दिया है। साथ ही फिल्म का पहला पोस्टर भी जारी हुआ है। काफी वक्त से सोनाक्षी सिन्हा ने सिल्वर स्क्रीन से दूरी बना कर रखी थी। वहीं उनके पति जहीर इकबाल का भी कोई नया प्रोजेक्ट सामने नहीं आया था। मगर अब कपल बहुत जल्द फिल्म 'तू है मेरी किरण' में साथ अभिनय करता दिखाई देगा। फिल्म रोमांटिक थ्रिलर होगी। फिल्म के फस्ट लुक में सोनाक्षी एक टेबल पर लैपटॉप पर काम करती दिखाई दे रही हैं। वहीं उनके पास बैठे जहीर उन्हें घूर रहे हैं। फिल्म 'तू है मेरी किरण' 23 अक्टूबर 2026 को रिलीज होने वाली है। फिल्म का लेखन और निर्देशन करण रावल ने किया है। 'तू है मेरी किरण' में जहीर इकबाल और सोनाक्षी सिन्हा मुख्य किरदारों में नजर आएंगे। फिल्म का निर्माण सर्वेश गोयल, अश्वनी कुमार, मनोज दराक और नृपाल पटेल ने मिलकर किया है, फिल्म 'तू है मेरी किरण' का फर्स्ट लुक रिलीज होते ही सोशल मीडिया पर फिल्म की ट्रोलिंग शुरू हो गई। यूजर्स ने फिल्म को लेकर अलग-अलग तरह के कमेंट्स किये। एक यूजर ने लिखा, सुपर फ्लॉप होगी मेरे शब्द याद रखना। वहीं दूसरे यूजर ने लिखा, क्या सच में आपके लगता है कि इस तरह की फिल्म कोई देखेगा। वहीं अन्य यूजर ने कमेंट कर लिखा, ईडी को इसकी जांच करना चाहिए, कोई किसी ऐसी फिल्म पर पैसा क्यों लगाएगा जिसका फ्लॉप होना तय है। यह पहली बार नहीं है जब सोनाक्षी सिन्हा और जहीर किसी फिल्म में साथ काम कर रहे हों। इससे पहले 2022 में रिलीज हुई फिल्म डबल एक्स एल में भी दोनों ने साथ अभिनय किया था। । फिल्म का निर्देशन सतराम रमानी ने किया था। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप हो गई थी। सोनाक्षी और जहीर पहली बार सलमान खान की एक पार्टी में मिले थे।



दोनों ने लगभग 7 साल तक एक-दूसरे को डेट किया और अपने रिश्ते को मीडिया से छुपा कर रखा। साल 2022 में दोनों ने फिल्म डबल एक्सएल में एक साथ काम भी किया था। आखिरकार, जून 2024 में दोनों ने मुंबई में सोनाक्षी के घर पर स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत कोर्ट मैरिज कर ली थी।

30 हजार फीटपर मौतसे जंग- कैप्टन स्मितने हवामें बचाई १८० लोगों की जान



स्मित माच्छर इस वक्त दुनिया के लिए हीरो बन गए हैं। बुधवार यानी 30 सितंबर को फ्लाईदुबई की उड़ान के दौरान कॉकपिट में साथी पायलट के हमले के बाद वह बुरी तरह घायल हो गए। बावजूद इसके उन्होंने उड़ान संभालने की कोशिश की और 150 से अधिक यात्रियों की जान बचा दी। अभी तक की रिपोर्ट के मुताबिक साथी पायलट खुद विमान हाईजैक करने की कोशिश में थे। उससे विमान को बचाने की कोशिश में ही वह घायल हुए। अब उनकी बहादुरी की चर्चा भारत से लेकर दुनिया तक हो रही है लेकिन करीब 40 साल पीछे चलें तो एक और भारतीय नाम सामने आता है। वह नाम है नीरजा भनोट वह सिर्फ यात्रियों को बचाते-बचाते शहीद ही नहीं हुई थीं, बल्कि उनकी कहानी आज भी विमान में मौजूद किसी भी आपात स्थिति में साहस की मिसाल मानी जाती है। दोनों की घटनाएं एक जैसी नहीं थीं। नीरजा भनोट का सामना आतंकियों से हुआ था, जबकि स्मित माच्छर के मामले में उड़ते विमान के कॉकपिट में ही हिंसक हमला हुआ। नीरजा की जान चली गई, जबकि स्मित माच्छर घायल होने के बाद बच गए. लेकिन दोनों मामलों में एक चीज कॉमन रही। वह यह कि कुछ ही सेकंड में लिए गए फैसले सैकड़ों यात्रियों की जिंदगी तय कर सकते थे। 5 सितंबर 1986 को पैनएम की फ्लाइट 73 मुंबई से फ्रैंकफर्ट होते हुए न्यूयॉर्क जा रही थी। विमान कराची में रुका था। बोइंग 747 में यात्रियों और चालक दल समेत 379 लोग सवार थे। इनमें 193 भारतीय थे। इसी दौरान चार हथियारबंद आतंकी एयरपोर्ट सुरक्षा कर्मियों के भेष में विमान में दाखिल हुए और उन्होंने विमान पर कब्जा कर लिया। ये आतंकी अबू निदाल संगठन से जुड़े थे। इसके बाद करीब 17 घंटे तक हाईजैक संकट बना रहा। विमान में सीनियर फ्लाइट पर्सर थीं नीरजा भनोट। उन्हें जैसे ही हाईजैक का पता चला, उन्होंने कॉकपिट में मौजूद पायलटों को खतरे का संकेत दिया। पायलट, को-पायलट और फ्लाइट इंजीनियर आपात रास्ते से विमान से बाहर निकलने में कामयाब रहे। विमान उड़ने की स्थिति में नहीं रहा। लेकिन अंदर मौजूद यात्रियों की सुरक्षा की बड़ी जिम्मेदारी केबिन क्रू पर आ गई। हाईजैकर्स यात्रियों के पासपोर्ट मांग रहे थे। उनका मकसद खास तौर पर अमेरिकी नागरिकों की पहचान करना था। नीरजा और उनके साथियों ने कई अमेरिकी यात्रियों के पासपोर्ट छिपा दिए। इससे आतंकियों के लिए अमेरिकी यात्रियों को अलग करना मुश्किल हो गया। घंटों तक नीरजा और बाकी क्रू यात्रियों को शांत रखने की कोशिश करते रहे। बाहर सुरक्षा बलों और आतंकियों के बीच बातचीत चल रही थी, लेकिन फिर हालात अचानक बिगड़ गए। आतंकियों ने गोलीबारी शुरू कर दी। इसके बाद पाकिस्तानी सुरक्षा बलों ने विमान में कार्रवाई की और यात्री बाहर निकलने की कोशिश करने लगे। नीरजा यात्रियों को आपात निकास की ओर ले जा रही थीं। इसी दौरान उन्हें गोली लग गई। रिपोर्टों के मुताबिक वह घायल होने के बावजूद यात्रियों की मदद करती रहीं। बच्चों को बचाने की कोशिश के दौरान भी उन्होंने पीछे हटने के बजाय यात्रियों को बाहर निकालने की कोशिश जारी रखी। बाद में बुरी तरह घायल नीरजा की मौत हो गई । 30 सितंबर को एविएशन इंडस्ट्री में एक बार फिर एक भारतीय की हिम्मत की चर्चा हो रही है। फ्लाईदुबई की फ्लाइट एफजेड 1073 दुबई से इजरायल की राजधानी तेल अवीव जा रही थी। विमान में 174 लोग सवार थे। इसे भारतीय मूल के कप्तान स्मित माच्छर उड़ा रहे थे। उड़ान के दौरान कॉकपिट में उनके ओमानी को-पायलट ने कथित तौर पर उनपर हमला कर दिया और उन्हें चाकू मार दिया। हमले के दौरान विमान तेजी से नीचे जाने लगा। फ्लाइट-ट्रैकिंग आंकड़ों के हवाले से बताया गया कि विमान करीब 30,875 फीट से 16,750 फीट तक सिर्फ 29 सेकंड में नीचे आ गया। यानी कुछ ही सेकंड में विमान करीब 14 हजार फीट नीचे आ गया। ऐसी स्थिति में विमान को संभालने के लिए पायलट के पास बेहद कम समय था। स्मित माच्छर हमले में घायल हो चुके थे। इसके बावजूद उन्होंने विमान को संभालने की कोशिश जारी रखी। वह कॉकपिट का दरवाजा खोलने में कामयाब रहे। इसके बाद यात्री और चालक दल के कुछ सदस्य कॉकपिट में पहुंचे और हमलावर को काबू करने में मदद की। विमान को सऊदी अरब के ताबुक की ओर मोड़ दिया गया। वहां उतरने के बाद स्मित माच्छर को अस्पताल ले जाया गया। विमान में सवार सभी यात्री सुरक्षित हैं। रिपोर्टों के मुताबिक विमान के तेजी से नीचे आने के दौरान उसके रडर को भी काफी नुकसान पहुंचा।